प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा

(ECCE) (F - 3)

UNIT-1

Written by - Saurabh Kumar

*** प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा : प्रमुख अवधारणाएँ ⇒**

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा न तो औपचारिक शिक्षा है और न ही मात्र पोषण आहार कार्यक्रम है। यह एक समग्र विकास की अवधारणा है। वृद्धि जिसमें बच्चों की उत्तम जीविका वृद्धि और उसके सर्वांगीण विकास की आवश्यकताओं की पूर्ति उपर्युक्त योजनाओं व्यवस्थाओं का निर्धारण कर सुनिश्चित करना है। इसके अंतर्गत बच्चे का गर्भावस्था में विकास जन्म के बाद तीन वर्ष तक देखरेख के साथ अनौपचारिक शिक्षा की व्यवस्था तथा 6 से 8 वर्ष तक यानि कक्षा 1 से 2 तक पूर्व प्राथमिक शिक्षा की प्रवृत्तियों का विस्तार एवं प्राथमिक शिक्षा से जुड़ाव है इस अवधारणा में देखभाल पोषण स्वास्थ्य शिक्षा सभी का समावेश सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है।

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा की अवधारणा सर्वप्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में उभर कर आई। इससे पूर्व Montessory kinder garten nursery, play school आदि नामों से चल रहे कार्यक्रम (ECCE) की समग्र अवधारणा से परे केवल शिक्षा के पहलु पर जोड़ देते आए हैं। विद्यालय पूर्व शिक्षा से अभिप्राय है औपचारिक शिक्षा।

ECCE के समग्र अवधारणा के साथ ICDS 1975 से बाल विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है परंतु पहुँच और गुणवत्ता के क्षेत्र में अभी बहुत कुछ किये जाने की आवश्यकता है। विद्यालय पूर्व शिक्षा के गुणवत्ता में वृद्धि के लिए नवीनीकरण की आवश्यकता है क्योंकि शिशु का विकास तेज गति से होने वाली में निरंतर है विकास का पहला चरण उसके क्रमिक विकास को प्रवाहित करता है। स्वास्थ्य इत्यादि सुविधाएँ और वंचित मनोसामाजिक परिवेश बच्चे की सिखने एवं विकास की आवश्यकताएं पूरी करने के लिए अनुकूल

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

वातावरण , बनाते है। एक ऐसे वातावरण का निर्माण जहाँ बच्चों को सुनने बोलने तथा अभिव्यक्ति का मौका मिलता है।

* ECCE की आवश्यकता एवं उद्देश्य :⇒

ECCE योजना पूर्व प्राथमिक बाल्यावस्था के विद्यार्थियों के देखभाल एवं शिक्षा को सुनिश्चित करती है। प्राथमिक बाल्यावस्था के बच्चे एवं ECCE scheme के तहत उनका शिक्षण होता है। जिनका उम्र 3 वर्ष से ज्यादा एवं 5½ वर्ष से कम है।

ECCE की आवश्यकता :–

(1.) दिल्ली राजधानी में एक कॉनफ्रेंस को आयोजित किया गया जिसमें ECCE को शिक्षा के मुख्य केन्द्र पर लाने का नीतिगत चर्चा की तथा सरकार को इस पर आवश्यक कार्यक्रम तैयार करने का सुझाव दिया गया। यह स्थापित करता है कि बच्चे का मस्तिष्क में प्रथम छः वर्षों में अद्भुत सीखने की गति होती है।

(2.) बाल केन्द्रित उपागमों , गतिविधि आधारित शिक्षण विधियों , खेल-खेल में शिक्षा तथा आनन्दमय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा को मजबूत करने की जरूरत है।

(3.) ECCE का वैश्विक क्षेत्र है तथा यह मानवीय समाज का एकीकृत कार्य है जिसका विकास कर आगे आनेवाली पीढ़ी को समृद्ध किया जा सकता है।

(4.) ECCE कार्यक्रम बच्चों के मजबूत नींव एवं विकास के लिए आवश्यक है। प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण के हिसाब से भी ECCE आवश्यक है।

(5) यह बच्चों के स्वास्थ्य एवं भोजन के पोषणीय आवश्यकता पर जोर होता है।

(6.) प्रत्येक बच्चा अद्वितीय है तथा उसमें वैयक्तिक विभाजन है। अतः ECCE आवश्यक है।

Scanned by CamScanner

ECCE - Early Childhood Care and Education

ECCE के उद्देश्य :-

(1.) पूर्व प्राथमिक बाल्यावस्था के विद्यार्थियों का शारीरिक एवं मानसिक विकास करना
(a) खलीते से पोशाक पहनना
(b) शौचालय सम्बन्धी आदतें
(c) समय पर नियमित रूप से भोजन करना
(d) साफ एवं स्वच्छ रहना।
(e) सीखी हुई बातों के अनुभव को माता-पिता, मित्रों, शिक्षकों तथा समूह के बीच शेयर करना।

(3.) सामाजिक तरीके, ढंग, आदतें तथा अवधारणाओं को सीखाना।

(4.) आत्म - अभिव्यक्ति को सीखाना एवं प्रोत्साहित करना।

(5.) संख्याओं से संबंधित व्यवहारिक संकल्पनाओं का प्रभावशाली ढंग से खेल - खेल में बताना।

(6.) उनमें शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक प्रक्रियाओं को विभिन्न आयामों तथा गतिविधियों द्वारा समग्र विकसित करना।

(7.) नये - नये शब्दों एवं क्रियाओं से परिचित करना।

(8.) सही एवं गलत के समझ को विकसित करना।

(9.) विद्यालय के प्रति तत्परता का भाव विकसित करना।

(10.) सृजनशीलता एवं आत्मनिर्भरता की ओर बच्चों को बढ़ाना।

(11.) वाद - विवाद एवं वार्तालाप सम्बन्धी गतिविधि की ओर बच्चों को जागृत करना।

(12.) बच्चों में अच्छे सामाजिक दृष्टिकोण का विकास करना ताकि वे खेल तथा दूसरे सामाजिक गतिविधियों में मन से भाग ले सकें।

(13.) सौन्दर्य सम्बन्धी भावों को जागृत करना।

(14.) हरेक बच्चों को मदद करना ताकि वे अच्छी आदतों का स्वागत कर सकें।

(15.) बच्चों के विकास के हिसाब से कल्पना का सृजन करना, कौशलों से परिचित कराना।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

* प्रारंभिक वर्षों के दौरान गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल शिक्षा का बच्चे के विकास एवं जीवन पर प्रभाव

बचपन के पहले आठ साल बेहद महत्वपूर्ण होते है, खासकर पहले तीन साल। यह समय भविष्य के स्वास्थ्य, बढ़त और विकास की बुनियाद होती है। दूसरे किसी भी समय के मुकाबले इस दौरान बच्चे तेजी से सीखते है। इस उम्र में बच्चों पर ध्यान देना अतिआवश्यक होता है क्योंकि इसका प्रभाव जीवन भर होता है। शुरुआती सालों में देखभाल और ध्यान बच्चों को फलने-फूलने में मदद करता है। बच्चों को गोद लेना, थामना, बातें करना उनकी बढ़त को उकसाता है। लड़का हो या लड़की, दोनों की ही एक जैसी शारीरिक, भावनात्मक, मानसिक और सामाजिक जरूरतें होती है। सीखने को क्षमता दोनों में बराबर होते है। दुलार, ध्यान और बढ़ावे की जरूरत दोनों को होती है। साथ ही इन्हें संतुलित आहार की आवश्यकता होता है। ऐसे परिवेश में पले-बढ़े बच्चे की मानसिकता सकरात्मक होती है। प्राय: ऐसा देखा गया है कि बच्चे का बचपन जिस तरह के परिवेश में हुआ है। उनकी मानसिकता वैसी ही बन जाती है। प्रारंभिक वर्षों के दौरान गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल शिक्षा बच्चों के विकास का आधार होता है। वह एक दिशा के रूप में कार्य करता है। स्वस्थ परिवेश में पल-पढ़ कर बच्चे का स्वस्थ विकास होता है। जिससे वो आगे चलकर अच्छा करता है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner